Sl.No. :

नामांक Roll No.

No. of Questions – 3

No. of Printed Pages – 07

SS–34–1–T.W. (Hindi)

यहाँ से काटिए

उच्च माध्यमिक परीक्षा, 2016

SENIOR SECONDARY EXAMINATION, 2016

हिन्दी टंकण लिपि

(TYPEWRITING HINDI)

समय : 1 घण्टा

पूर्णांक : 40

प्रश्न पत्र को खोलने के लिए यहाँ फाड़ें

परीक्षार्थियों के लिए सामान्य निर्देश :

1) परीक्षार्थी सर्वप्रथम अपने प्रश्न पत्र पर नामांक अनिवार्यतः लिखें।

2) प्रत्येक कागज के एक तरफ टंकण करें।

3) प्रत्येक प्रश्न को नये पृष्ठ से आरम्भ करना है।

4) प्रत्येक लाइन के बीच में द्विगुणित अवकाश (Double Spacing) देकर टंकण करना है।

5) प्रत्येक प्रश्न के लिए 2 अंक सजावट के निर्धारित है।

यहाँ से काटिए

1) निम्न अवतरण को टंकित कीजिए :

अंक

टंकण – 18

सजावट – 2

कुल – 20

"मन की शान्ति – सुख का अनुभव"

मन चंचल है। व्यक्ति को किसी विषय पर टिकने ही नहीं देता या फिर अनावश्यक ही भटकता रहता है। शुद्ध चिन्तन में प्रवेश नहीं करने देता। अत: मन में शान्ति की तलाश सबको रहती है। प्रत्येक के मन में युवावस्था में आगे बढ़ने की इच्छा होती रहती है और उम्र के उत्तरार्द्ध में एकमात्र शान्ति प्राप्त करने की ही इच्छा रहती है। जीवन के उत्तरार्द्ध में, जब व्यक्ति ईश्वर की ओर आमुख होना चाहता है, शान्ति का मार्ग प्रशस्त होता है। अशान्त मन से यह सम्भव नहीं है।

शान्ति मन का विषय है। बुद्धि और इन्द्रियां सदा मन में चंचलता बनाए रखती है। इन्द्रिय सुख व्यक्ति को बाहरी विश्व में इतना लिप्त रखता है कि मन की ओर देख पाना अथवा मन की आवाज को सुन पाना उसके लिए लगभग असंभव होता है। इन्द्रियों के अनुभव ही मन पर अंकित रहते हैं और उन्हीं की कल्पना में मन लगा रहता है। मन में एक साथ अनेक विषयों का चलते रहना ही तो अशान्ति का कारण है। इन्द्रियों का सुख वर्तमान होता है,

जब कि मन पर अंकित स्मृतियां अपना कार्य मन में करती रहती हैं। इन्हीं के आधार पर व्यक्ति अपने भविष्य की कल्पना करता है।

भारतीय दर्शन में योग का विशेष महत्व है। योग में चित्तवृत्तियों के निरोध को महत्वपूर्ण माना गया है, जबकि गीता ऐसा नहीं मानती। गीता में योग का स्वतंत्र अर्थ है। इसके अलावा शान्ति का दूसरा मार्ग व्यक्ति के सामने नहीं है। यहां तक कहा गया है कि सारी इन्द्रियों के निरोध के बाद यदि एक भी इन्द्रिय नियंत्रण के बाहर रह जाए तो भी व्यक्ति मशक के छेद की भांति बूंद–बूंद करके खाली हो जाएगा। अत: यह कार्य तो शत–प्रतिशत, पूर्ण रूप में ही सम्पादित होना आवश्यक है।

इन्द्रियों के निरोध के दो मार्ग प्रचलित है–एक 'शम' अथवा शमन का और दूसरा 'दम' या दमन का? 'शम' शान्ति–प्राप्ति में साधक होता है और इसमें दमन हेतु बनता है। शमन मार्ग में इन्द्रिय दमन स्वत: होने लगता है। यद्यपि इसमें लम्बे अभ्यास की आवश्यकता अवश्य होती है। दूसरी ओर जीवन का लक्ष्य शान्ति प्राप्त करना नहीं है, अपितु आनन्द की प्राप्ति है। शान्ति स्वयं आनन्द स्वरूप है आनन्द ईश्वरीय गुण है। इसमें दु:ख और अशान्ति का लेश भी नही है। यहाँ आनन्द भी समृध्यानन्द और शान्तानन्द नाम से दो विभागों में विभक्त हो रहा है।

'समृद्धि' में 'ऋद्धि' विद्यमान है। लौकिक ऐश्वर्य इसमें भरा पड़ा है। लौकिक ऐश्वर्य में खान–पान, मकान, यान आदि की उत्कृष्टता सम्मिलित है। लौकिक और अलौकिक, दोनो प्रकार की समृद्धि तो अवतार कोटि के पुरूषों में ही देखी जा सकती है। उनके साथ तो सिद्धि भी जुड़ी होती है। कृष्ण जीवन भर समृध्यानन्द में निरन्तर लीन रहे। जबकि समृध्यानन्द की पूर्णता की रक्षा करते हुए उसको बराबर निभाते रहना अवतार कोटि में ही सम्भव हो पाता है। और, कृष्ण उसको सदा निभाते रहे, इसीलिए उनको अच्युत कहा गया है। मानव का परम भाग्यवान् रूप भी ऋद्धि भाव की लौकिकता तक ही सीमित रहता है।

समृध्यानन्द सदा तरंगित रहता है। कभी भी तरंग शून्य नहीं होता। इसके विपरीत शान्तानन्द में तरंग नहीं उठा करती। अवतार कोटि में इसका एक उदाहरण राम को माना जाता है। चाहे वनवास की बात हो या फिर राज्य भार संभालने की, हर जगह राम की एकरसता का ही वर्णन मिलता है।

आनन्द के दो भेद है – शान्तानन्द और समृध्यानन्द। कर्म क्षेत्र में चलते हुए धन–सम्पत्ति की वृद्धि करते रहना समृध्यानन्द है। समृद्धि की सारी चंचलता को हजम किए रहना शान्तानन्द है। किसी व्यक्ति को अचानक बड़ी सम्पत्ति प्राप्त हो जाए तो उसका समृध्यानन्द उछल पड़ता है। स्वजनों, परिजनों को आमंत्रित करना, दिव्य भोजन–पान, संगीत–गोष्ठियों आदि की व्यवस्था उछाल रूप में दिखाई पड़ती है। शेष धन को व्यक्ति सुरक्षित रखकर शान्त भाव में आ जाता है। संसार के सारे सुखों में इसका गूढ़ दृष्टि से अनुभव किया जा सकता है।

2) निम्नलिखित परिपत्र को यथोचित रूप से टंकित कीजिए :

अंक

टंकण – 8

सजावट – 2

कुल – 10

उत्तर प्रदेश सरकार

वित्त – विभाग

(आय – व्ययक अनुभाग)

क्रमांक : प: 9(1) वित्त – (12) आ. व्य./2015 लखनऊ, दिनांक 18 जून, 2015

परिपत्र

प्रेषित :

समस्त शासन सचिव, उत्तर प्रदेश।

समस्त सम्भागीय आयुक्त, उत्तर प्रदेश।

समस्त विभागाध्यक्ष, उत्तर प्रदेश।

समस्त जिला कलेक्टर।

विषय :– राजकीय व्यय में मित्तव्ययता रखने बाबत।

महोदय,

राज्य में भयंकर अकाल एवं महामारी की स्थिति को देखते हुए शासन द्वारा राजकीय कार्य में किये जाने वाले व्यय में मित्तव्ययता करने तथा राजकीय कार्य में सादगी अपनाने के उद्देश्य से यह परिपत्र जारी किया जा रहा है। साथ ही महामारी को ध्यान में रखते हुए अपने कार्यालय, शहर, गांव, मोहल्लों में गन्दगी न हो इसका भी ध्यान आकृष्ट किया जाता है। निम्न निर्णय तुरन्त प्रभाव से अग्रिम आदेशों तक प्रभावी रहेंगें –

1) किसी भी विभाग में नई नियुक्ति से पूर्व वित्त विभाग एवं कार्मिक विभाग की सहमति की आवश्यकता होगी। बिना सहमति नियुक्ति पर प्रतिबन्ध रहेगा।

2) समस्त विभागों में नये पदों के सृजन करने/क्रमोन्नयन करने पर प्रतिबन्ध रहेगा।

3) वाहन, वातानुकूलित यंत्र, सैल्यूलर फोन की खरीद पर प्रतिबन्ध रहेगा।

4) हवाई जहाज से यात्रा पर प्रतिबन्ध रहेगा।

5) राजकीय भोज आयोजित करने पर प्रतिबन्ध रहेगा।

6) समस्त विभागों में यात्रा व्यय में एक चौथाई कमी की जावेगी।

आज्ञा से

हस्ताक्षर

(मोहन आर वैंकटरमन)

वित्त सचिव,

वित्त विभाग

3) निम्नलिखित सारणी को यथोचित रूप देकर टंकित कीजिए :

अंक

टंकण – 8

सजावट – 2

कुल – 10

यूलिप्स का स्थिति – विवरण

दिनांक 30 जून, 2015

	राशि			राशि	
दायित्व	वास्तविक मू. रूपये में	बाजार मूल्य रूपये में	सम्पत्तियाँ	वास्तविक मूल्य रूपये में	बाजार मूल्य रूपये में
देय बिल	4000	8000	भवन	17,000	13,000
लेनदार	10,000	10,000	फर्नीचर	7000	5,000
पूँजी	20,000	20,000	देनदार	25,000	20,000
ऋण	10,000	10,000	बैंक मे जमा	10,000	10,000
लाभ हानि खाता	15,000	-			
	59,000	48,000		59,000	48,000

DO NOT WRITE ANYTHING HERE